बुद्ध विष्णु के नौ वें अवतार क्यों नहीं ?

(Why Buddha is not the Nineth incarnation of Vishnu ?)

➢पुराणो में बुद्ध

1. बुद्ध का जिक्र विष्णु पुराण, वाराह पुराण, स्कंद पुराण, भागवत पुराण, गरुण पुराण, अग्निपुराण, लिंगपुराण, पद्मपुराण आदि में मिलता है।
2. ब्रह्मवैवर्त पुराण अध्याय 04 सग 09 श्लोक 12 में केवल छह अवतार हैं।
3. हरिवंश पुराण में 06 अवतार है लेकिन उसमें कहीं भी बुद्ध का नाम नहीं है।
4. नारदीय पुराण में 10 अवतार है लेकिन इसमें भी बुद्ध का नाम नहीं है।
5. वायु पुराण में 12 अवतार हैं उसमें भी बुद्ध का नाम कहीं नहीं है।
6. श्रीमद भागवत पुराण में 22 अवतार हैं इसमें बुद्ध को 21 वाँ अवतार बताया बताया है।
7. लिंग पुराण में 10 अवतार हैं अध्याय दो के सर्ग 48 श्लोक 31–32 में इसमें बुद्ध को 09 वें अवतार के रूप में बताया है

   मत्स्यः कूर्मोऽथ वाराहो नरसिंहोऽथ वामनः।
   रामो रामश्च कृष्णश्च बौद्धः कल्की तथैव च ॥
   (लिंग पुराण, 02/48/31–32)

   इस पुराण में दस अवतारों की सूची दी गई है जिसमें परशुराम और राम ये दो अवतार एक ही समय हुए माने गए हैं।
8. गरुड़ पुराण अध्याय 02 सर्ग 22 के श्लोग 31 में भी 10 अवतारों में बुद्ध को 09 वां अवतार बताया गया है

   मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नरसिंहोऽथ वामनः।
   रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्किस्तयैव च ॥
   (गरुड़पुराण 2/20/37)
9. वराह पुराण के अध्याय 04 के श्लोक 02 में भी बुद्ध को 09 वां अवतार बताया गया है

Dhamachakra

10. पद्म पुराण (पद्म का अर्थ 'कमल') अध्याय उत्तर के 257 सर्ग के श्लोग 40–41 में भी बुद्ध को 09 वां अवतार बताया गया है

मत्स्यः कूर्मो, वराहश्च नरसिंहोइथ वामनः।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्किश्च ते दश ॥
(पद्मपुराण, उत्तर, 257/40–47)

मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, राम (परशुराम), कृष्ण, बुद्ध और कल्की – ये दश अवतार हैं।

11. अग्नि पुराण अध्याय 16 श्लोक 1–4 में

उन लोगों को द्वितीय अर्थार्थ बाद्ध बताया गया है जिन्होंने वैदिक कर्मकांडों को छोड़ दिया है और उनको पाषंडी अथार्थ वेद विरोधी बताया गया है।

पुराण कहता है कि देवासुर–संग्राम में दैत्यों से हारकर देवता ईश्वर के पास गए और बचाओ–बचाओ की रट लगाने लगे। तब शुद्धोदन के पुत्र ने मायामोह का रूप धारण कर लिया। उसने दैत्यों को मोह (ज्ञान) में डालकर उनसे वैदिकधर्म छुड़ा दिया। वे (दैत्य) बौद्ध कहलाए। अन्य भी वें लोग बौद्ध कहलाए जिन्होंने वेदमार्ग का त्याग कर दिया था । वह (शुद्धोदन–पुत्र) अर्हत हो गया और दूसरों को अर्हत बनाने लगा। इस तरह वैदिक कर्मकांड को छोड़कर लोग पाषंडी (वेदविरोधी) बन गए।

12. नारदीय पुराण में कहा गया है कि –

आप पर बहुत बड़ी विपत्ति भी आ पडे तो भी किसी द्विज (अर्थार्थ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) को बुद्ध विहार (बौद्धालय) में प्रवेश नहीं करना चाहिए। यदि कोई बुद्धविहार में प्रवेश करता है तो उस पाप की सैकड़ों प्रायश्चितों से भीः शुद्धि नहीं होती।

13. श्री भागवत पुराण के एक श्लोक में – तब कलयुग शुरू होने पर राक्षसों को मुँह अज्ञान में डालने के लिए 'गया' के अंतर्गत टिकट प्रदेश में जिन या जन का पुत्र बुद्ध नाम से होगा।

14. ब्रह्मसूत्र के शंकर भाष्य में अध्याय 01/सर्ग 03/श्लोक 38 पर –

शूद्रों के विषय में शंकर के विचार इससे भी ज्यादा गए बीते हैं अपने भाष्य में लिखा है कि शूद्रों को न वेद सुनने का अधिकार है और ना पढने का, न उसके अर्थ

समझने का अधिकार है और न उसके अनुसार अनुष्ठान (यज्ञ) आदि करने का, यदि वह (शूद्रों) वेद पढ़ने वालो के पास जा कर उसे (वेद को) सुन ले तो उसके दोनों कानों से शीशा (रांगा) और लाख पिघलाकर भर देनी चाहिए। शूद्र चलता फिरता शमशान होता है अतः उसके समीप वेद नहीं पढ़ना चाहिए, वेद का उच्चारण करने पर शूद्रों की जीभ काट देनी चाहिए और वेद को सुनकर कंठस्थ कर लेने पर उसका शरीर को चीर देना चाहिए, शूद्रों को ज्ञान नहीं देना चाहिए।

(ब्रह्मसूत्र अ. 01/सर्ग 03/श्लोक 38)

15. ब्रह्म पुराण में बुद्ध का जिक्र दो बार आया है अध्याय 122 श्लोक 69 में

16. पद्म पुराण भूमि अध्याय के सर्ग 08 का 66 वां श्लोक में –

इस पुराण में बुद्ध का अनेकत्र उल्लेख हुआ है, यथा

नमः कृष्णाय बुद्धाय नमो स्लेच्छप्रणाशिने।

(भूमि 08/66)

कृष्ण को नमस्कार म्लेच्छों का विनाश करने वाले बुद्ध को नमस्कार। अर्थात् कृष्ण को नमस्कार करते हुए बुद्ध को म्लेच्छों का विनाश करने वाला बताया गया है।

17. पद्म पुराण के सृष्टि अध्याय के 73 वें सर्ग के 92 श्लोक में –

प्रलम्बहन्त्रे शितिवाससे नमो, नमोउस्तु बुद्धाय च दैत्यमोहिने।

(सृष्टि 73/92)

(प्रलंब के विनाशक बलराम को नमस्कार, दैत्यों को मोहने वाले बुद्ध को नमस्कार हो, अर्थात यहां बुद्ध को दैत्यों को मोहने वाला बताया गया है)

18. भागवत पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, खं. 3, अ. 28, श्लोक 53 में

न वेदद्यावनीं भाषां प्राणैः कंठगतैरपि।
हस्तिना ताड्यमानोऽपि न गच्छेज्जैनमंदिरम् ॥

(भ.पु, प्रतिसर्ग पर्व, खं. 3, अ. 28, श्लोक 53)

अर्थात, चाहे कितनी बड़ी मुसीबत आ जाए, चाहे प्राणों के लाले पड़ जाएं, तो भी यवनों की भाषा न बोले चाहे पीछे पागल हाथी ही क्यों न पड़ जाए, तो भी जैन मंदिर में प्रवेश मत करे–हाथी से अपनी जान बचाने के लिये भी नही।

➢ धर्मो का तुलनात्मक अध्ययन

- हिंदू धर्म के सभी देवी–देवताओं के अवतारों के हाथों में हथियार मिलते हैं जबकि बुद्ध ने आजीवन हथियार नहीं उठाया इसलिये बुद्ध की किसी भी मूर्ति/फोटो में हथियार नही मिलता है।
- बुद्ध मानवता को सर्वोपरि रखते हैं जबकि हिंदू धर्म मार–काट हिंसा को सर्वोपरि रखता है।
- बुद्ध ने अपने आप को कभी अवतार नहीं माना और बौद्ध धर्म के अनुसार अवतार नहीं होते हैं। किन्तु हिंदू धर्म में अवतार वाद की धारणा है।
- बुद्ध आजीवन पैदल चलें दुनिया भर में धम्म को फैलाया जबकि हिंदू धर्म के अवतार बिना जानवरों के एक कदम भी नहीं चले और मात्र भारत की सीमाओं तक सीमट कर रह गयें।
- केवल हिन्दू धर्म ग्रन्थों और उनके मानने वालो के अनुसार ही बुद्ध विष्णु के अवतार हुऐ हैं। जबकी अन्य धर्म व बौद्ध के अनुयायी बुद्ध को विष्णु का अवतार नही मानते।
- हिंदू धर्म के सभी अवतारों में अपने सभी अवतारों के लिये कोई न कोई वाहन बनाया है जबकि बुद्ध का कोई अपना वाहन नहीं है ।
- हिंदू धर्म के सभी देवी–देवता अवतार हुए, जबकि बुद्ध ने बायोलॉजिकल जन्म लिया है।
- हिन्दू धर्म अवतार चमत्कार स्वर्ग नरक अंधविश्वास पाखंड की बात करता है जबकि बौद्ध धम्म परिश्रम, चार आर्य सत्य, शील, प्रज्ञा, करूणा और अप्प दीपो भव की बात करता है।

Dhamachakra

➢ पुरात्तविक साक्ष्य

- भारतीय पुरातत्व विभाग को वर्तमान समय तक मिले किसी भी शिलालेख अभिलेख में कहीं भी ये लिखा नहीं मिला, कि बुद्ध विष्णु के अवतार थे।
- सबसे बड़े बुद्धिष्ट राजा सम्राट अशोक ने अपने द्वारा निर्मित 84,000 शिला लेखों में कहीं भी यह नहीं लिखा की बुद्ध भगवान है और विष्णु के अवतार हैं।
- चीनी यात्री फाहियान, ह्वेनसॉन्ग, इत्सिंग आदि यात्रियों ने भारत में रहकर बौद्ध धर्म का अध्ययन किया, 10 वर्ष, 15 वर्ष बौद्ध विहार में बौद्ध धम्म की दीक्षा ली लेकिन किसी भी यात्रि ने अपने यात्रा वृतांत में कहीं भी बुद्ध को विष्णु का अवतार का वर्णन नहीं बताया।
- बुद्ध का जिक्र विष्णु पुराण, वाराह पुराण, स्कंद पुराण, भागवत पुराण, गरुण पुराण, अग्निपुराण, लिंगपुराण, पद्मपुराण आदि में मिलता है लेकिन किसी भी पुराण में बुद्ध का वास्तविक नाम नहीं आया है।
- बुद्ध का जिक्र, हिन्दू धर्म ग्रन्थों में आना, इस बात का साक्ष्य है कि हिन्दू धर्म ग्रन्थ बुद्ध के बाद लिखे गये।

➢ डॉक्टर अंबेडकर की 22 प्रतिज्ञा –

किसी भी बुद्धिष्ट व अम्बेडकरवादी के लिये सर्वोपरि मानी जाती है –

- डॉक्टर अंबेडकर अपनी पवित्र 22 प्रतिज्ञा में पहली पांच प्रतिज्ञाओं में ईश्वर को न मानने की शपथ लेते हैं जो निम्न हैं –
    1. मैं ब्रह्मा विष्णु और महेश में कोई विश्वास नहीं करूँगा और न ही मैं उनकी पूजा करूँगा।
    2. मैं राम और कृष्ण जो भगवान के अवतार माने जाते हैं में कोई आस्था नहीं रखूँगा और ना ही मैं उनकी पूजा करूँगा।

Dhamachakra

3. मैं गौरी गणपति और हिंदुओं के अन्य देवी देवताओं में आस्था नहीं रखूँगा और ना ही मैं उनकी पूजा करूँगा।
4. मैं भगवान के अवतार में विश्वास नहीं करता हूँ।
5. मैं यह नहीं मानता और न कभी मानूंगा की भगवान बुद्ध विष्णु के अवतार थे मैं इसे पागलपन और झूठा प्रचार प्रसार मानता हूँ।

➢ तर्क संगत प्रश्न

हिंदू धर्म के अनुसार बुद्ध विष्णु के 09 वें अवतार हैं तो फिर

- यदि तथागत गौतम बुद्ध विष्णु के अवतार थे तो ब्रह्मणों ने उनके खिलाफ हिंसात्मक आंदोलन क्यों चलाया ?
- यदि तथागत गौतम बुद्ध विष्णु के अवतार थे तो हिन्दुओं (ब्रह्मण, क्षत्रियों, वैश्यो) ने बुद्धिज्म के पतन को क्यों नही रोका ?
- यदि तथागत गौतम बुद्ध विष्णु के अवतार थे तो उनकी शिक्षाओ के प्रसार प्रसार मे हिन्दुओं ने अपना अमूल्य योगदान क्यों नही दिया ?
- यदि तथागत गौतम बुद्ध विष्णु के अवतार थे तो हिन्दु धर्म के ग्रंथ संस्कृत भाषा मे क्यों लिखे है? पाली भाषा मे क्यों नही लिखे जबकि तथागत गौतम बुद्ध की भाषा तो पाली थी। लेकिन हिन्दू धर्म ग्रंथो मे पाली भाषा का कही कोई जिक्र तक नही।
- यदि तथागत गौतम बुद्ध विष्णु के अवतार थे तो जो लोग हिंदू धर्म छोड़कर बौद्ध धम्म को स्वीकार करते है। तो हिंदू खुश होने की बजाय उनसे दुःखी क्यों हो जाता है? उनका विरोध क्यों करता है ?
- हिंदू धर्म के धार्मिक ग्रंथों में बुद्ध क्यों नहीं मिलते ?
- हिंदू धर्म में बुद्ध का मंदिर क्यों नहीं मिलते और क्यों नहीं पूजते ?
- हिंदू धर्म बुद्ध और उनके विचारो को साथ लेकर क्यों नहीं चलता ? हिंदू धर्म के ठेकेदारों ने बुद्ध के लिए कोई भी पुराण, उपनिषद, चालिसा आदि ग्रन्थों की रचना क्यों नही की ?
- हिंदू धर्म के धर्म ग्रंथों में बुद्ध के प्रति नफरत को क्यों दर्शाया गया ?

➢ निष्कर्ष

सच्चाई यह है की जब तथागत गौतम बुद्ध की शिक्षाओ को जम्भुदीप (सम्पूर्ण अखंड भारत) के लोग मानने लगे और हिंदू धर्म छोड़ने लगे तो हिन्दुओं की धर्म के नाम पर चलने वाली रोजी रोटी बंद होने लगी तो बहुजन समाज के लोगो को दिगभ्रमित करने के लिए, की कही यह हमसे अलग ना हो जाए यदि यह हमसे अलग हो गये तो फिर हमारी गुलामी कौन करेगा ? इस बात का हिन्दुओं को डर सताने लगा था इसलिए उन्होंने यह भ्रमजाल फैलाया की बुद्ध विष्णु के अवतार है।

जबकि बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर तो यह दावे के साथ कहते है, की भारत का इतिहास ब्राह्मण वाद और बुद्धिज्म के बीच का संघर्ष के अलावा कुछ नही है। बुद्ध के समय से ही यह संघर्ष चलता आ रहा है। और आज भी निरंतर चल ही रहा है। यह संघर्ष तब ही खत्म होगा जब हम हिंदू धर्म और हिंदू धर्म से उतपन्न ब्राह्मण वाद और मनुवाद को जड़मूल से खत्म कर देंगे।

कपिल कुमार बौद्ध

Dhamachakra